अक्टूबर: 2025 वर्ष : 9 अंक : 1

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

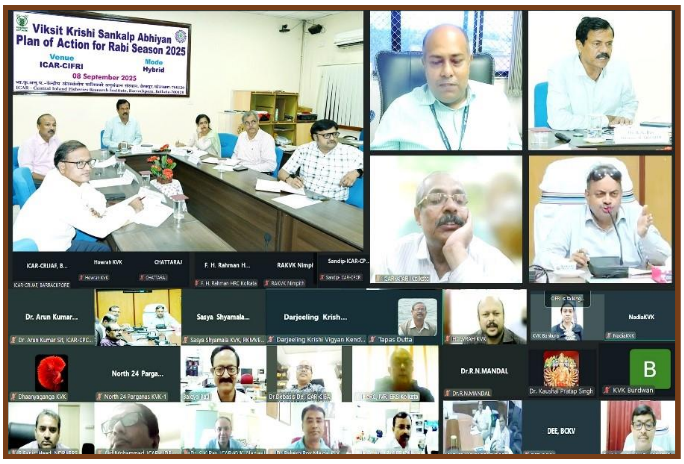

निदेशक की कलम से

"मुश्किलें केवल आपको अपनी ताकत का एहसास कराने के लिए आती हैं।"

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का अक्टूबर 2025 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। सर्वप्रथम मैं आप सभी को नवरात्रि, दुर्गा पूजा और दशहरा की बधाई देता हूँ।

भारत एक विशाल देश है। प्राचीनकाल से यहाँ धर्म, भाषा तथा संस्कृति में विविधता रही है।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में सितंबर 2025 के कार्यकलापों और अनुसंधान गतिविधियों का विवरण दिया गया है जिसमें प्रमुख है – राष्ट्रपिता महातमा गांधी का जन्म दिवस (2 अक्टूबर) जिसे स्वच्छता को समर्पित किया गया है। प्रति वर्ष अक्टूबर महीने में भारत सरकार के निर्देशानुसार स्वच्छता अभियान चलाया जाता है। साथ ही, यह विशेष दिन भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म दिवस है।

अंत में, आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

'आजीविका विविधीकरण और उद्यमिता विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर–सीआईएफआरआई), बैरकपुर द्वारा 1 से 3 सितंबर, 2025 तक "आजीविका सुधार हेतु शोभामयी मछली पालन (Ornamental Fish Culture for Livelihood Improvement)" विषय पर तीन दिवसीय व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम अनुसूचित जनजाति घटक (STC) के अंतर्गत आयोजित किया गया था।

यह प्रशिक्षण झारखंड के छोटानागपुर पठार क्षेत्र के जनजातीय मत्स्य पुरुषों एवं महिलाओं के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था, जिसमें पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के 10 गाँवों से 28 प्रतिभागी (12 पुरुष एवं 16 महिलाएँ) शामिल हुईं। अधिकांश प्रतिभागी लघु स्तर के अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में संलग्न हैं और शोभामयी मछली पालन को नई आजीविका के रूप में अपनाने के इच्छुक थे।

उद्घाटन सत्र में प्रशिक्षण समन्वयक ने बताया कि शोभामयी मत्स्य पालन एक सतत, कम लागत वाला और उच्च लाभकारी उद्यम है, जिसकी घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में बढ़ती मांग है।

पहले दिन प्रतिभागियों को प्रजाति पहचान, बाज़ार संभावनाएँ, एवं जलवायु अनुकूलता पर जानकारी दी गई। गप्पी, मॉली, स्वॉर्डटेल, गोल्डफिश, कोई कार्प और एंजलफिश जैसी लोकप्रिय प्रजातियों की पहचान और मूल्य श्रृंखला पर विस्तृत चर्चा की गई। दूसरे दिन स्थानीय संसाधनों से टैंक निर्माण, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रजनन तकनीक, बीज उत्पादन एवं जीवित आहार संस्कृति पर व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अंतिम दिन उद्यमिता विकास, सरकारी योजनाएँ, सब्सिडी एवं वित्तीय सहायता पर सत्र आयोजित किए गए।

समापन समारोह में प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए और प्रमाणपत्र प्राप्त किए। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना की और कहा:

“यह पहल जनजातीय समुदायों को शोभामयी मत्स्य पालन में सफल उद्यमी बनने के लिए सशक्त करेगी।”

कार्यक्रम का समन्वयन डॉदिबाकर भक्ता एवं डॉ. सुमन कुमारी ने किया, जबकि श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अविषेक साहा और डॉ. श्रेया भट्टाचार्य ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

मछली रोग निदान और प्रयोगशाला प्रथाओं में ओडिशा अधिकारियों की दक्षता वृद्धि

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर द्वारा 1 से 5 सितंबर, 2025 तक ओडिशा राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मैदान स्तर के युवा अधिकारियों की तकनीकी क्षमता को सुदृढ़ करना था, विशेषकर मछली रोग निदान और प्रयोगशाला तकनीकों के क्षेत्र में।

कुल 29 सहायक मत्स्य अधिकारी (AFO), जिनमें 12 महिलाएँ शामिल थीं, ने प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण में 11 कक्षा सत्र, 2 प्रयोगशाला अभ्यास और 2 क्षेत्रीय भ्रमण (जिसमें पूर्व कोलकाता वेटलैंड का भ्रमण शामिल था) आयोजित किए गए। प्रतिभागियों को सामान्य मछली रोगों की पहचान, लक्षण विश्लेषण, तथा PCR, qPCR, सूक्ष्मदर्शी परीक्षण और जल गुणवत्ता विश्लेषण जैसी निदान तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण की प्रमुख विशेषता मत्स्य प्रबंधन में ड्रोन तकनीक का समावेश था, जिससे तालाब निगरानी और रोग सर्वेक्षण में इसके उपयोग को प्रदर्शित किया गया।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने प्रशिक्षणार्थियों के साथ संवाद के दौरान कहा कि सहायक मत्स्य अधिकारियों को व्यवहारिक ज्ञान से सुसज्जित करना आवश्यक है ताकि वे मत्स्य उत्पादकता और मत्स्यजीवियों की आजीविका में सुधार ला सकें। विषयों में अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, मृदा एवं जल गुणवत्ता विश्लेषण, एनक्लोज़र में रोग प्रबंधन, पेन संस्कृति तकनीक, एवं रोग सर्वेक्षण में जीआईएस अनुप्रयोग शामिल थे। 90% प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को बहुत प्रभावी और क्षेत्रीय कार्य हेतु उपयोगी बताया। समापन समारोह में डॉ. दास ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. प्रणय कुमार परिदा और श्री गणेश चंद्र ने किया, जबकि श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय एवं डॉ. अविषेक साहा ने सहयोग प्रदान किया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान–2025 के अंतर्गत रबी सत्र अभियान हेतु कार्ययोजना निर्माण बैठक

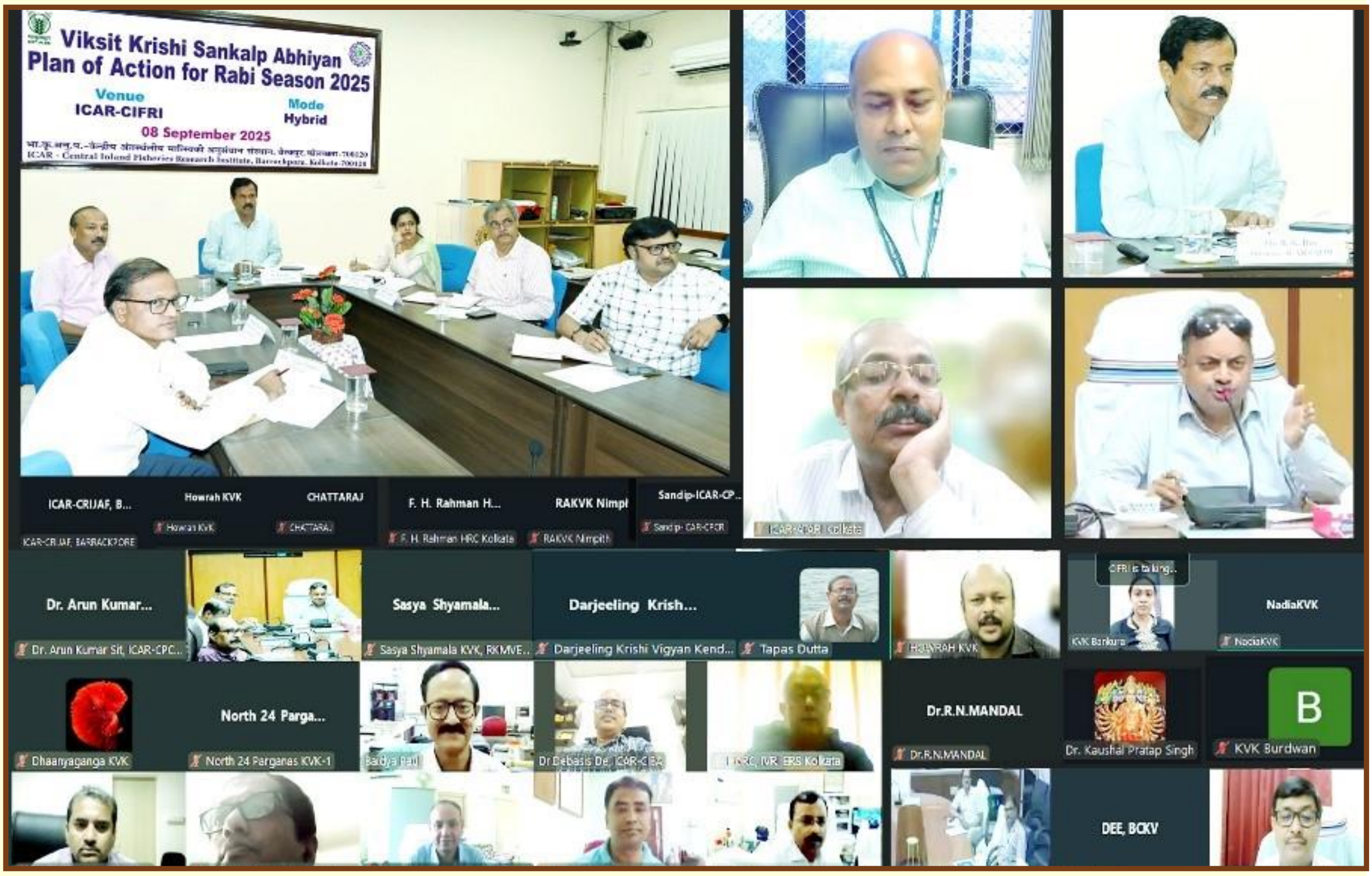

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर द्वारा 8 सितंबर, 2025 को हाइब्रिड मोड में एक इंटरएक्टिव बैठक आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य विकसित कृषि संकल्प अभियान (VKSA–2025) के अंतर्गत रबी सत्र अभियान (3–18 अक्टूबर, 2025) के लिए कार्ययोजना तैयार करना था।

बैठक की अध्यक्षता डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई एवं पश्चिम बंगाल राज्य के लिए रबी अभियान के नोडल अधिकारी ने की। डॉ. प्रदीप कुमार डे, निदेशक, आईसीएआर–एटीएआरआई, कोलकाता ने सह-अध्यक्षता की। बैठक में आईसीएआर संस्थानों, आरआरसी, केवीके, और तीन राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अपने स्वागत भाषण में डॉ. दास ने पूर्व खरीफ अभियान से प्राप्त अनुभव साझा किए और सभी संगठनों से आग्रह किया कि वे अपने स्टाफ को इस अभियान में सक्रिय रूप से शामिल करें।

डॉ. डे ने सुझाव दिया कि विशेषज्ञों की टीम शीघ्र गठित की जाए ताकि कार्ययोजना को अंतिम रूप देकर परिषद को भेजा जा सके।

प्रतिभागियों ने वित्तीय स्रोत, त्योहारों के दौरान किसानों की उपलब्धता, एवं बहुविषयी टीम गठन से संबंधित मुद्दे उठाए। डॉ. दास और डॉ. डे ने आश्वासन दिया कि इन सभी बिंदुओं पर विचार करते हुए कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

बैठक सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जिससे रबी सत्र अभियान की राष्ट्रीय उद्देश्यों (विकसित भारत@2047) के अनुरूप कार्ययोजना बनाने में दिशा प्राप्त हुई।

“मछली रोग निदान एवं प्रबंधन” पर मानव संसाधन विकास कार्यक्रम

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर द्वारा 8 से 12 सितंबर, 2025 तक “मछली रोग निदान एवं प्रबंधन” विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने किया। उन्होंने कहा कि मत्स्य एवं जलकृषि क्षेत्र में बढ़ती रोग चुनौतियों का सामना करने हेतु व्यवहारिक ज्ञान और निदान कौशल अत्यंत आवश्यक हैं।

प्रशिक्षण में जल गुणवत्ता विश्लेषण, पोस्टमार्टम परीक्षण, पारंपरिक एवं आणविक निदान तकनीकें, तथा रोग प्रबंधन रणनीतियाँ शामिल थीं। व्यावहारिक प्रदर्शन और प्रयोगशाला सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को वास्तविक अनुभव प्रदान किया गया।

कुल 20 स्नातकोत्तर विद्यार्थी (कलकत्ता विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, कामधेनु विश्वविद्यालय, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय एवं चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय) ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने कहा कि यह प्रशिक्षण उनके पाठ्यक्रम में उपलब्ध नहीं होने वाले व्यावहारिक अवसरों को प्रदान करता है। डॉ. एस. के. मान्ना, पाठ्यक्रम समन्वयक एवं प्रभागाध्यक्ष ने कहा कि “प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी ने इस प्रशिक्षण को सफल बनाया और यह जलीय स्वास्थ्य प्रबंधन में मानव संसाधन क्षमता निर्माण की दिशा में एक मील का पत्थर है।”

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा "स्वदेशी मछलियों का संरक्षण" पर एनएबीएआरडी प्रायोजित प्रशिक्षण

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा 9 से 13 सितंबर, 2025 तक "स्वदेशी मछलियों का संरक्षण" विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम एनएबीएआरडी द्वारा प्रायोजित था और हाउसफेड कॉम्प्लेक्स, दिसपुर में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर तथा डॉ. एस. के. माजही, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में किया गया। समन्वय डॉ. सिमांकू बोराह एवं डॉ. ए. के. यादव ने किया, जबकि डॉ. बी. के. भट्टाचार्ज्य, डॉ. राकेश कुमार एवं केंद्र के अन्य कर्मचारियों ने सहयोग किया।

श्री लोकन दास, मुख्य महाप्रबंधक, एनएबीएआरडी, असम क्षेत्रीय कार्यालय, ने उद्घाटन सत्र में स्वदेशी मछलियों के पारिस्थितिकीय, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्व पर प्रकाश डाला और इनके तेजी से घटते अस्तित्व को संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रशिक्षण में आईसीएआर–सीआईएफआरआई, कॉलेज ऑफ फिशरीज, राहा, एनएफडीबी-एनईआरसी, गुवाहाटी, वर्ल्डफिश, मलेशिया, और मत्स्य विभाग, असम के विशेषज्ञों ने स्वदेशी प्रजातियों की पहचान, प्रजनन, बीज उत्पादन, आवास पुनर्स्थापन, पारिस्थितिकीय खतरों और सामुदायिक संरक्षण रणनीतियों पर व्याख्यान दिए। कैलोंग–कापिली एक्वाटेक पार्क, सोनापुर का क्षेत्रीय भ्रमण भी आयोजित किया गया।

असम के 10 जिलों (धीमाजी, लखीमपुर, नागांव, मोरीगांव, दरांग, विश्वनाथ, कामरूप, नलबाड़ी, बारपेटा, जोरहाट) से मछुआरे, मत्स्य किसान, विस्तार कर्मी एवं विद्यार्थी कार्यक्रम में शामिल हुए। समापन सत्र में डॉ. एस. दत्ता, प्रोफेसर, आईआईटी गुवाहाटी ने कहा कि

"असम एवं पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध मछली विविधता की रक्षा के लिए शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और स्थानीय समुदायों को संयुक्त रूप से कार्य करना होगा।"

यह प्रशिक्षण आईसीएआर–सीआईएफआरआई के निरंतर प्रयासों का हिस्सा है, जो अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन को सुदृढ़ करने और जलीय जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देने की दिशा में एनएबीएआरडी के सहयोग से एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

अंतर्स्थलीय मछलियों की वर्गिकी, जैव विविधता एवं आवास मूल्यांकन पर युवा शोधकर्ताओं के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने भारतीय अंतर्स्थलीय जल में मछली जैव विविधता अनुसंधान से संबंधित शोध सीमाओं और संभावित चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए 8 से 12 सितंबर, 2025 तक "अंतर्स्थलीय मछलियों की वर्गिकी, जैव विविधता एवं आवास मूल्यांकन" पर एक सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने अंतर्स्थलीय मछली विविधता के नियमित निगरानी की सतत संसाधन प्रबंधन में महत्ता पर बल दिया और मछली एवं शंख-शैवाल वर्गिकी में मैदानी प्रशिक्षण (field-oriented training) की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

कुल 11 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया, जिनमें शामिल थे:

एक पीएच.डी. शोधार्थी, केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (CIFE), मुंबई (महाराष्ट्र) से;

दो एम.एफ.एससी. छात्र, कॉलेज ऑफ फिशरीज, लैंबुचेहरा (त्रिपुरा) से;

एक एम.एफ.एससी. छात्र, पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल) से;

दो बी.एफ.एससी. छात्र, कॉलेज ऑफ फिशरीज, जबलपुर (मध्य प्रदेश) से;

एक वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर से; तथा

चार शोधार्थी, एनएमसीजी परियोजना (ICAR-CIFRI) से।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईसीएआर–सीआईएफआरआई के प्रख्यात वैज्ञानिकों तथा अन्य प्रतिष्ठित अनुसंधान संस्थानों जैसे — जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (ZSI, कोलकाता), सेंट्रल आइलैंड एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टिट्यूट (CIARI, पोर्ट ब्लेयर), और लाइबनिज़ इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रेशवॉटर इकोलॉजी एंड इनलैंड फिशरीज (बर्लिन, जर्मनी) के विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए।

पाठ्यक्रम में फिनफिश एवं शेलफिश वर्गिकी (जैसे क्लूपिड, सायप्रिनिड, कैटफिश, स्नेकहेड और वाणिज्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण झींगा प्रजातियाँ) पर सैद्धांतिक और व्यवहारिक (hands-on) प्रशिक्षण शामिल था।

प्रतिभागियों को जैव विविधता मूल्यांकन की तकनीकों पर भी प्रशिक्षित किया गया, जिसमें विभिन्न विविधता सूचकांकों (diversity indices) और उन्नत सॉफ्टवेयर जैसे PRIMER, R, PAST, तथा Aquatic Species Invasiveness Screening Kit (AS-ISK) का उपयोग सिखाया गया। इसके

अतिरिक्त, नदी आवास लक्षणांकन (habitat characterization) एवं Fish-based Index of Biotic Integrity (IBI) के उपयोग पर भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

12 सितंबर, 2025 को आयोजित समापन सत्र के दौरान, डॉ. एस. सामंता, निदेशक-प्रभारी, आईसीएआर–सीआईएफआरआई ने प्रशिक्षण पुस्तिका (Training Manual) का औपचारिक विमोचन किया।

कार्यक्रम का समापन उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ, जहाँ प्रतिभागियों ने अर्जित ज्ञान और कौशल के प्रति गहरी प्रशंसा एवं प्रेरणा व्यक्त की।

घरेलू तालाबों में मत्स्य पालन शुरू कर सकें। ICAR-CIFRI के विशेषज्ञों ने तालाब प्रबंधन पर सत्र आयोजित कर लाभार्थियों को आवश्यक कौशल प्रदान किए।

भिमा नदी के मछुआरों के लिए उत्तरदायी मत्स्य पालन पर जागरूकता कार्यक्रम एवं कोरकल वितरण – कर्नाटक (अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत)

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलुरु ने "मछली उत्पादन और संरक्षण के लिए उत्तरदायी मत्स्य पालन" पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 17 सितंबर 2025 को किया। यह कार्यक्रम अनुसूचित जाति उप-योजना (SC-SP) के अंतर्गत आयोजित किया गया था तथा इसका संचालन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई, और डॉ. एल. एन. मूर्ति, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, सीआईएफआरआई, बैंगलुरु के मार्गदर्शन में हुआ।

कार्यक्रम के अंतर्गत पाँच अनुसूचित जाति के मछुआरों को, जिनमें तीन महिलाएँ भी शामिल थीं, कोरकल (परंपरागत गोल नौका) वितरित की गईं। इस कार्यक्रम में कर्नाटक के कलबुर्गी जिले के 50 मछुआरे शामिल हुए।

डॉ. वी. एल. रम्या, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए उत्तरदायी मत्स्य पालन एवं मत्स्य संसाधनों के संरक्षण के महत्व पर बल दिया। डॉ. विजयकुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ने अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के संवर्धन और सतत प्रबंधन में सीआईएफआरआई के योगदान पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती माला बी. नारायण राव, अध्यक्ष, कर्नाटक मत्स्य विकास निगम (KFDC) रहीं। श्री एस. आर. नागराज, उपनिदेशक, मत्स्य विभाग, ने मछुआरों के लिए उपलब्ध विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी, जबकि श्री शंकर गोंदली, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, ने नदीय मत्स्य पालन की आजीविका में भूमिका पर जोर दिया।

यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक डॉ. एल. एन. मूर्ति, डॉ. वी. एल. रम्या, डॉ. विजयकुमार एम. ई., डॉ. जेस्ना पी. के., और डॉ. संथानकुमार वी. द्वारा समन्वित किया गया।

क्षेत्रीय केंद्र, भा.कृ.अनु.प-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान, बैंगलोर में राजभाषा अधिनियम एवं नियम पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय केंद्र, भा.कृ.अनु.प-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान, बैंगलोर में राजभाषा अधिनियम एवं नियम पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत, भा.कृ.अनु.प-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र -बैंगलोर में 19 सितंबर 2025 को इस संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में "राजभाषा अधिनियम एवं नियम" पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन हुआ। बैंगलोर क्षेत्रीय केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. एल. एन. मूर्ति ने सभा को संबोधित किया और कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इस अवसर पर, भा.कृ.अनु.प-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर के राजभाषा उप निदेशक श्री आशुतोष कुमार तिवारी ने हिंदी भाषा के महत्व और अनुसंधान एवं प्रशासनिक कार्यों में हिंदी भाषा के प्रयोग पर विस्तार से व्याख्यान दिया। उन्होंने अधिकारियों को हिंदी के नियमों और अधिनियम से अवगत कराया। उन्होंने राजभाषा अधिनियम 1963 और उसकी विभिन्न धाराओं के बारे में भी बताया। कार्यक्रम में भा.कृ.अनु.प-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान और भा.कृ.अनु.प-केंद्रीय मीठा जल मत्स्य पालन संस्थान के वैज्ञानिक, प्रशासनिक और तकनीकी के कुल 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. जेसना पी. के., डॉ. सोनालिका साहू, श्रीमती सुमित्रा देवी, एस., और श्री गौरव कुमार ने किया।

ओडिशा के मत्स्य अधिकारियों का सीआईएफआरआई में रोग निदान एवं प्रयोगशाला कौशल पर प्रशिक्षण

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर द्वारा 14 से 18 सितंबर, 2025 तक ओडिशा राज्य के मत्स्य अधिकारियों के लिए पाँच दिवसीय क्षमता-विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य अधिकारियों के तकनीकी ज्ञान, रोग निदान कौशल, और अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन की व्यावहारिक समझ को सुदृढ़ करना था।

यह सीआईएफआरआई द्वारा संचालित प्रशिक्षण का पाँचवाँ बैच था। इस पहल के माध्यम से संस्थान राज्य विभागों के मानव संसाधन को मजबूत करने और सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए निरंतर समर्थन प्रदान कर रहा है।

कुल 27 अधिकारियों (जिनमें सात महिलाएँ थीं) ने इस प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। कार्यक्रम में 11 कक्षा सत्र, 2 प्रयोगात्मक सत्र, और 2 फील्ड विज़िट आयोजित किए गए।

प्रशिक्षण के दौरान विषयों में — अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, जल और मृदा गुणवत्ता विश्लेषण, सामान्य मछली रोग, रोग निदान की विधियाँ, एनक्लोज़र एवं पेन कल्चर में रोग प्रबंधन, मत्स्य पालन में GIS का उपयोग आदि शामिल थे।

प्रतिभागियों को ईस्ट कोलकाता वेटलैंड की फील्ड विज़िट कराई गई, जहाँ व्यावहारिक प्रदर्शन भी हुआ। प्रयोगात्मक सत्रों और अनुसंधान प्रयोगशालाओं में प्रत्यक्ष प्रशिक्षण से प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण अनुभव प्राप्त हुआ।

90% प्रतिभागियों ने फीडबैक में बताया कि प्रशिक्षण अत्यंत उपयोगी और करियर संवर्धन हेतु प्रभावी रहा।

समापन सत्र में डॉ. एस. समता, प्रमुख, FARI प्रभाग, सीआईएफआरआई, ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और प्रमाणपत्र वितरित किए। यह प्रशिक्षण डॉ. अपर्णा रॉय और श्री मितेश रामटेके द्वारा, श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अविषेक साहा के सहयोग से, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

आईसीएआर–सीआईएफआरआई द्वारा गंगा नदी के मध्य भाग (बक्सर एवं पटना) का मानसूनी सर्वेक्षण संपन्न

आईसीएआर–सीआईएफआरआई, बैरकपुर ने 20 से 23 सितंबर, 2025 के बीच एनएमसीजी (Phase-III) परियोजना के अंतर्गत गंगा नदी के मध्य भाग — बक्सर से पटना तक — मानसूनी सर्वेक्षण एवं नमूना संकलन अभियान सफलतापूर्वक संपन्न किया।

इस अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्रवाह (High-flow) वाले मानसूनी मौसम के दौरान नदी के जैविक स्वास्थ्य, जैव विविधता एवं मत्स्य संसाधन गतिशीलता का मूल्यांकन करना था। मानसूनी बाढ़ नदी की उत्पादकता, मछली प्रजनन और पारिस्थितिक तंत्र पर गहरा प्रभाव डालती है।

टीम ने जल, तलछट (sediment) और मछली के नमूने एकत्र किए ताकि मानसूनी जल विज्ञान के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सके। सर्वेक्षण में 48 से अधिक फिनफिश प्रजातियाँ, साथ ही झींगे और केकड़े दर्ज किए गए — जो इस नदी खंड की समृद्ध जैव विविधता को दर्शाते हैं।

मुख्य प्रजातियों में Clupisoma garua, भारतीय प्रमुख कार्प (Labeo catla, L. rohita, C. mrigala, L. calbasu), तथा

विभिन्न कैटफिश (Rita rita, Mystus spp., Wallago attu, Sperata spp.), साथ ही Gudusia chapra और Macrobrachium spp. जैसी प्रजातियाँ शामिल थीं। Amblypharyngodon mola और Puntius spp. जैसी छोटी स्वदेशी प्रजातियाँ भी पाई गईं।

कई किशोर मछलियों (juveniles) की उपस्थिति ने यह संकेत दिया कि मानसून अवधि में प्रजनन सक्रिय है। सर्वेक्षण में प्रमुख रूप से लिफ्ट नेट, गिल नेट और हुक एंड लाइन नेट का उपयोग देखा गया। CPUE (Catch per Unit Effort) बक्सर क्षेत्र में 5.5 से 15.5 किग्रा/नाव/दिन दर्ज किया गया।

टीम ने स्थानीय मछुआरों से संवाद कर स्वदेशी ज्ञान और प्रव्रजन पैटर्न का दस्तावेजीकरण किया, साथ ही सतत मत्स्य पालन जागरूकता भी बढ़ाई।

इस सर्वेक्षण के प्रारंभिक निष्कर्ष गंगा नदी तंत्र के राष्ट्रीय अध्ययन में योगदान देंगे और नदी पुनर्स्थापन एवं सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन की रणनीतियों के विकास में सहायक होंगे।

पूरा कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई के पर्यवेक्षण में, तथा डॉ. डी. भक्त के नेतृत्व में एनएमसीजी शोधार्थियों के सहयोग से संपन्न हुआ।

संस्थान में हिन्दी सप्ताह 2025 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में हिन्दी सप्ताह दिनांक 15 से 22 सितंबर 2025 के बीच मनाया जा रहा है। इसका उद्घाटन दिनांक 15 सितंबर 2025 को संस्थान मुख्यालय में किया गया। इस समारोह में सबसे पहले राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई। संस्थान के प्रभागाध्यक्षों ने हिन्दी के प्रयोग और प्रसार-प्रचार के साथ भावी लक्ष्य के लिए सुझाव दिए। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने राजभाषा अनुपालन को एक सांविधानिक दायित्व के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का उल्लेख करते हुए बताया कि हिन्दी का प्रचार-प्रसार सिर्फ केन्द्रीय सरकार का नहीं हम सभी देशवासियों का भी दायित्व है।

सप्ताह के दौरान संस्थान कर्मियों के लिए कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं जैसे दिनांक 15 सितंबर 2025 को अंकन एवं स्लोगन, 16 सितंबर 2025 को श्रुत लेखन, 17 सितंबर 2025 को आशुभाषण, 18 सितंबर 2025 को प्रश्नोत्तरी तथा कार्य समीक्षा और 19 सितंबर 2025 को कविता पाठ। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान कर्मियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और पुरस्कार भी जीते। समापन समारोह दिनांक 22 सितंबर 2025 को किया गया। सबसे पहले डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष ने स्वागत सम्बोधन किया। संस्थान के निदेशक, डा. बसंत कुमार दास ने हिन्दी कार्यों की प्रगति और संस्थान द्वारा विकसित नवीन तकनीकों आदि पर प्रकाश डाला।

उन्होंने सभी से राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए सचेष्ट होने हेतु आह्वान किया। समारोह के मुख्य अतिथि, डा. अरुण होता, प्रोफेसर और प्रभागाध्यक्ष (हिन्दी), पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, बारासात, पश्चिम बंगाल ने

हिन्दी को एक सामासिक संस्कृति के तौर पर परिभाषित करते हुए अन्य भाषाओं से इसकी अनुकूलनीयता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा सदैव हमें एक-दूसरे से जोड़ने के लिए होती है और यही हमारी संस्कृति की पहचान है। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और कार्यान्वयन का अर्थ है- हमारी संस्कृति, अस्मिता और एकता के दिशा में प्रयास करना।

इस अवसर पर एक लिफलेट, "सतत मत्स्य पालन और आजीविका संवर्धन में मनिका मन (बिहार) की भूमिका" तथा हिन्दी मासिक न्यूज़लेटर (सितम्बर 2025) का विमोचन किया गया। हिन्दी सप्ताह 2025 का सफल कार्यान्वयन संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास के मार्गदर्शन में डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्याधिकारी, हिन्दी कक्ष; श्री संजीव कुमार साहु, वैज्ञानिक; श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक; डा. गुंजन कर्नाटक, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. सुमन कुमारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक; सुश्री सुनीता प्रसाद, मुख्य तक.अधि. (हिन्दी) तथा श्रीमती सुमेधा दास, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (हिन्दी) द्वारा किया गया।

तेंपेननई नदी में सतत मत्स्य पालन हेतु जागरूकता कार्यक्रम

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलुरु ने "तेंपेननई नदी के मछुआरों की आजीविका संवर्धन हेतु सतत मत्स्य पालन" पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।यह कार्यक्रम अनुसूचित जाति उप-योजना (SC-SP) के अंतर्गत डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई, एवं डॉ. एल. एन. मूर्ति, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलुरु के मार्गदर्शन में संचालित हुआ।

इस पहल के अंतर्गत पाँच अनुसूचित जाति मछुआरों को कोरकल नौकाएँ वितरित की गईं, जिससे उनकी आजीविका को सुदृढ़ किया जा सके। कार्यक्रम में तिरुवण्णामलाई जिले के लगभग 50 मछुआरों ने भाग लिया। श्री गणपति एस., मत्स्य निरीक्षक, ने स्वागत भाषण में विभिन्न विकास योजनाओं पर प्रकाश डाला।

डॉ. वी. एल. रम्या, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ने SC-SP कार्यक्रम का परिचय देते हुए उत्तरदायी मत्स्य पालन एवं स्वदेशी संसाधन संरक्षण के महत्व पर बल दिया। डॉ. संथानकुमार वी., वैज्ञानिक, ने नदीय पारिस्थितिकी संरक्षण और सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन की आवश्यकता पर चर्चा की।

डॉ. जेस्ना पी. के., वैज्ञानिक, ने सहकारी समितियों की भूमिका पर जोर दिया और धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में श्री अरिवाझगन, अध्यक्ष, तेंपेननई अत्रु पाडुगई मत्स्य सहकारी समिति, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक डॉ. एल. एन. मूर्ति, डॉ. संथानकुमार वी., डॉ. वी. एल. रम्या, डॉ. जेस्ना पी. के. एवं डॉ. सिबिना मोल एस. के समन्वय में संपन्न हुआ।

संस्थान के कोच्चि केंद्र में हिंदी सप्ताह 2025 का आयोजन

संस्थान के कोच्चि केंद्र में 12 से 18 सितंबर, 2025 तक "हिंदी सप्ताह" का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। आयोजन का शुभारंभ 12सितंबर, 2025 को एक उद्घाटन कार्यक्रम से हुआ, जिसके उपरांत आई सी ए आर– केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,कोच्चि की वरिष्ठ तकनीकी सहायक (राजभाषा) श्रीमती प्रिया के.एम. द्वारा "हिंदी राजभाषा का महत्व" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान में प्रशासनिक कार्यों, जनसंचार तथा राष्ट्रीय पहचान के संवर्धन में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला गया तथा इसे एक बहुभाषी राष्ट्र में एकता को प्रोत्साहित करने, पारदर्शिता सुनिश्चित करने और सरकारी सेवाओं को जनता तक सुलभ बनाने के प्रभावी माध्यम के रूप में रेखांकित किया गया।

हिंदी सप्ताह के दौरान केंद्र के कर्मियों और अन्य कार्यालयों के युवाओं के लिए हिंदी अनुवाद, हिंदी शब्दों का मिलान, हिंदी श्रुतलेखन और हिंदी वाचन जैसी कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समापन समारोह दिनांक 18 सितंबर, 2025 को किया गया। आईसीएआर–सीएमएफ़आरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रतीश कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया तथा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

हिन्दी सप्ताह 2025 का सफल समन्वयन संस्थान के निदेशक, डा. बि. के. दास, के मार्गदर्शन में श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला (वैज्ञानिक), डॉ. दीपा सुधीशन (वरिष्ठ वैज्ञानिक) एवं डॉ. थैंकम थेरेसा पॉल (वरिष्ठ वैज्ञानिक), द्वारा किया गया।

जनजातीय मछुआरों का सशक्तिकरण: सीआईएफआरआई द्वारा आजीविका संवर्धन हेतु अंतर्स्थलीय जल में एनक्लोज़र संस्कृति पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), बैरकपुर में “अंतर्स्थलीय खुले जल में एनक्लोज़र कल्चर” पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य झारखंड के जनजातीय मछुआरों की उत्पादकता और आजीविका में सुधार लाना था।

22 से 26 सितंबर तक आयोजित इस प्रशिक्षण में झारखंड के सात जिलों से नौ जलाशयों में एनक्लोज़र कल्चर करने वाले प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम झारखंड की स्कैम्पी परियोजना निधि के अंतर्गत प्रायोजित था।

प्रशिक्षण में पिंजरा एवं तैरते पेन का डिजाइन, आहार प्रबंधन, रोग नियंत्रण, जलवायु सहनशील प्रजातियों का विविधीकरण, शीतकालीन पालन, और सतत कटाई जैसी तकनीकें शामिल थीं। प्रतिभागियों ने जलाशयों के जैविक एवं अजैविक गुणों का विश्लेषण और यूटीफिकेशन नियंत्रण हेतु लिम्नो-रासायनिक गतिशीलता की जानकारी प्राप्त की।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सीआईएफआरआई, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और कहा,

“ज्ञान एवं तकनीकी कौशल का उन्नयन ही ऐसे कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य होना चाहिए।”

उन्होंने मछुआरों को आधुनिक एनक्लोज़र कल्चर तकनीकों को अपनाने एवं संस्थान के साथ दीर्घकालिक सहयोग बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

समूह चर्चा सत्रों में प्रतिभागियों ने अपनी स्थानीय समस्याएँ साझा कीं, जिनके समाधान विशेषज्ञों ने स्थानीय पारिस्थितिकी के अनुसार सुझाए। साथ ही सामुदायिक सहभागिता मॉडल और विपणन रणनीतियों पर भी बल दिया गया।

यह कार्यक्रम जनजातीय मछुआरों के कौशल विकास और पारिस्थितिक जागरूकता को बढ़ावा देते हुए झारखंड में सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जैव विविधता संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

22 August, 2025 Strict Monitoring on Budget Implementation: No...

MAVERICK NEWS 30

Your Digital News Pulse : News for All

Empowering Communities Through Aquaculture: CIFRI's SCSP Initiative Supports SDG Goals in South 24 Parganas

Government of India
Press Information Bureau

Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying

CIFRI's Aquaculture Model Supports SDG 1, 5, and 14 in South 24 Parganas, West Bengal

Kolkata, August 23, 2025

In a landmark initiative aimed at rural economic upliftment, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI) has been actively promoting backyard pond fish culture across South 24 Parganas for over a decade. Recognising the dual utility of household ponds for drinking water and fish farming, the Institute has empowered local communities—especially women—to transform these rain-fed water bodies into sustainable sources of income and nutrition. Today, 2025, ICAR-CIFRI, in collaboration with Sasya Shyamala Krishi Vigyan Kendra, RKMVERI, South 24 Parganas, organised a mass awareness programme under the Scheduled Caste Sub-Plan (SCSP). The event saw the distribution of fisheries inputs to 350 Scheduled Caste rural villagers from 11 villages of Sonarpur Block, each owning ponds ranging from 0.02 to 0.04 hectares. Each beneficiary received 8 kg of fish seed (Indian Major Carp) and 120 kg of fish feed to initiate backyard pond fish culture.

Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, sensitised the gathering on inland open water fisheries and emphasised the long-term benefits of backyard pond culture in enhancing livelihoods and nutritional security. Smt. Lalita Bar, Panchayat Pradhan addressed the gathering and praised the ICAR-CIFRI initiative for empowering rural women by improving livelihood through demonstration of various fisheries technology. The programme resonated deeply with the beneficiaries. "I never imagined our small pond could become a source of income," said Parbati Purkait from Sonarpur. Another participant, Bablu Mondal, shared, "This initiative has given us hope. We now understand how fish farming can improve our children's nutrition and help us earn without leaving our homes."

Dr. Swagat Ghosh, Dr. Lianthuamluaia and Dr. Kavita Kumari addressed the gathering and informed about scientific fish farming.

The programme not only distributed resources but also instilled knowledge and confidence among the women, many of whom had never engaged in structured fish farming before. By integrating scientific practices with traditional knowledge, ICAR-CIFRI's initiative is paving the way for a resilient rural economy. The backyard pond fish culture model stands as a testament to how small-scale interventions, when backed by research and community engagement, can yield transformative results. Scientist Farmer interaction resolved several issues and reflected a broader narrative of empowerment, sustainability and hope.

SSS/23.8.25/.....

(Release ID: 2160252)

प्रयागराज, बुधवार 13 अगस्त, 2025 2

नमामि गंगे के तत्वावधान में कार्प मछलियों के बीजों को गंगा नदी में छोड़ा गया

प्रयागराज। मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए भादकृदअनुदपद-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक बारह अगस्त दो हजार पच्चीस को पवित्र पावन गंगा और यमुना के संगम तट स्थित अरैल घाट पर गंगा नदी में पाँच हजार भारतीय प्रमुख कार्प - कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डा0 डी एन झा ने उपस्थित लोगों को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग होना रखा है साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है, केन्द्राध्यक्ष डा0 बी आर चह्वान ने समारोह में आये लोगों का स्वागत करते हुए

को स्वच्छ रखने का शपथ दिलवाया, इस अवसर पर गंगा

খবর এখন সান্ধ্য দৈনিক

সত্যতা যাচাই করে তবেই খবর | খবরের ভেতরের খবর

30 August 2025 • Saturday • Page 1 • Khabar Ekhon Sandhya Dainik

আইসিএআর-সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ ইনস্টিটিউট দীর্ঘদিন ধরে দক্ষিণ ২৪ পরগনায় আঙিনার পুকুরকে দীর্ঘস্থায়ী আয়ের উৎসে রূপান্তর করার উদ্যোগ নিয়ে কাজ করছে। আগে পানীয় জলের জন্য ব্যবহৃত এই ছোট ছোট বর্ষানির্ভর পুকুর আজ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে মৎস্যচাষের মাধ্যমে পুষ্টি ও জীবিকার নতুন সম্ভাবনা তৈরি করছে। বারাকপুরে স্থিত সিফ্রি ও জয়গোপালপুর গ্রাম বিকাশ কেন্দ্র যৌথভাবে সুন্দরবনের বাসন্তী ব্লকে এক বৃহৎ গণসচেতনতামূলক কর্মসূচি আয়োজন করে। ১১টি গ্রামের ৩০০ জন প্রান্তিক সুন্দরবনের মানুষ অংশ নেন। এর মধ্যে ১০০ জন তফসিলি জাতি ও ২০০ জন তফসিলি উপজাতি পরিবারকে ৬ কেজি ভারতীয় প্রধান কার্প (রুই, কাতলা ও মৃগেল) মাছের বাচ্চা এবং ৮০ কেজি খাদ্য সরবরাহ করা হয়। উপস্থিত ছিলেন সিফ্রির ডিরেক্টর ড. বি কে দাস। এনজিওর সম্পাদক বিশ্বজিৎ মাহাকুর গ্রামীণ মহিলাদের ক্ষমতায়নে প্রকল্পটির ভূমিকার প্রশংসা করেন। এ ছাড়াও ড. প্রণয়া পারিদা, ড. লিয়ানথুমলুয়াইয়া ও ড. দিবাকর ভক্তা গ্রামবাসীদের পুকুর ব্যবস্থাপনা, খাদ্য ব্যবহার ও মাছের স্বাস্থ্য নিয়ে হাতে-কলমে প্রশিক্ষণ দেন।

AgroSpectrum Envisaging Future | Updating Present

AGROPOLICY AGROCHEM FINANCE AGRIBUSINESS AGROTECH AGRI-INPUTS AGRIBIO LIVESTOCK NATURE ALLIED INDUSTRY TYPES WORLD

PM-KISAN Utsav Diwas celebrated in Kolkata with focus on fisheries and farmer welfare

AGROPOLICY 05 Aug 2025 | Tuesday

The ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, in collaboration with the ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Kolkata Centre, observed 'PM-KISAN Utsav Diwas' on Saturday, marking a significant outreach initiative under the Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi (PM-KISAN) scheme.

The event was graced by Rajiv Ranjan Singh, Hon'ble Union Minister for Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, and Panchayati Raj. Addressing the gathering, the Minister reaffirmed the Centre's unwavering commitment to the economic empowerment of farmers and fishers across India. He also interacted with fishers and fish farmers and highlighted the critical role of fisheries in rural employment and livelihood generation.

The programme saw the participation of 81 fishers and fish farmers from South 24 Parganas district, alongside scientists and technical officers from both ICAR-CIFRI and ICAR-CIFE. The event was formally inaugurated with the traditional watering of a holy plant Tulsi by the Hon'ble Minister.
One of the key highlights of the day was the virtual address by Prime Minister Narendra Modi , which was broadcast live to over 2 crore farmers across the country through video conferencing. Farmers connected via ICAR institutions, Krishi Vigyan Kendras (KVKs), agricultural universities, PM Kisan Samriddhi Kendras, and Primary Agricultural Cooperative Societies.

During his address, the Prime Minister announced the release of the 20th instalment of the PM-KISAN scheme, amounting to Rs 20,500 crore, benefitting over 9.7 crore farmers nationwide. West Bengal alone accounted for 44.78 lakh beneficiaries. Many of the farmers present received real-time SMS confirmations of the credited amount.

Following the Prime Minister's address, Shivraj Singh Chouhan, Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, interacted with farmers from different states. He responded to their queries and urged them to adopt sustainable and integrated agricultural practices. He also encouraged them to avail themselves of other government schemes such as the Kisan Credit Card (KCC), Pradhan Mantri Matsya Sampada Yojana (PMMSY) and PM-KISAN.

The event in Kolkata was jointly coordinated by Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, and Dr. T. K. Ghoshal, Head, ICAR-CIFE Kolkata Centre, along with their teams . Dr. Das stressed on the importance of linking fisheries research with field-level outreach and government support to ensure inclusive development, especially in the inland and estuarine fishing sectors.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फ़ैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है